DEPARTMENT of POLITICAL SCIENCE
D.B. COLLEGE JAYNAGAR · BIHAR

BY- DR. A.K. Yadav
(Asst. Prof.)

B.A. Part-II (HON'S), Paper- IV

Date- 24.07.20

Lecture. No- 21 (Comparative Government and Politics)

डेविड ईस्टन द्वारा प्रतिपादित व्यवस्था सिद्धांत —
(Easton's View of Political System)

तुलनात्मक राजनीति में व्यवस्था की अवधारणा का प्रयोग करने वाले विद्वानों में ईस्टन का नाम अग्रणी है। सन 1953 में प्रकाशित अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'The Political System' में उसने राजनीति विज्ञान में एक 'सामान्य व्यवस्था सिद्धांत' निर्माण का विचार प्रस्तुत किया था। डेविड ईस्टन के अनुसार — "राजनीतिक व्यवस्था अन्तर क्रियाओं का ऐसा समूह है जिसके अंतर्गत मांगों को निर्गत (output) में बदला जाता है।" राजनीतिक व्यवस्था संस्थाओं एवं प्रक्रियाओं का एक जटिल समूह है जो समाज के भीतर आधिकारिक मूल्यों का विनियोजन करती है। इसलिए राजनीतिक व्यवस्था का अध्ययन इसलिए करते हैं क्योंकि उनके अधिकारपूर्ण निर्णय के परिणामों का समाज के लिए बहुत महत्व है और उन परिणामों को निर्गत (output) कहा जाता है। किसी भी व्यवस्था को जीवित रखने के लिए यह आवश्यक है कि उसमें निरन्तर निवेश (Inputs) होता रहे। निवेश के बिना कोई व्यवस्था कार्य नहीं कर सकती। और निर्गत (outputs) के बिना उसके कार्यों को समझा पहचाना नहीं जा सकता।

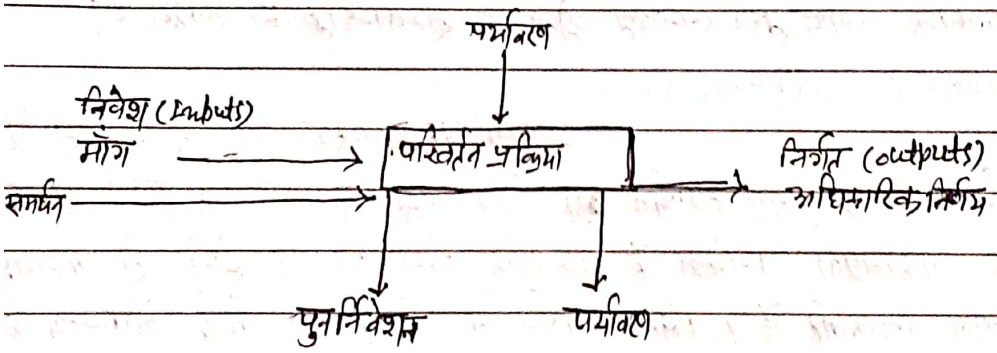

निवेश प्रकार्य (Inputs) → निवेश से तात्पर्य मांग तथा समर्थन से है। प्रत्येक राजनीतिक व्यवस्था के सामने पर्यावरण से कुछ 'मांगें' रखी जाती हैं। इन मांगों के पीछे मांग रखने वालों का 'समर्थन' होता है जो राजनीतिक व्यवस्था में निर्णय लेने वालों का ध्यान उन मांगों की ओर आकर्षित करता है। इसके साथ ही साथ-

P.T.O →

Scanned with CamScanner

B.A - Part - II

Paper - IV

Lecture - No - 21

By - DR. A. K. Yadav (Asstt. prof. G.P.T.T.) Pol. Sc.

'समर्थन' राजनीतिक व्यवस्था को विभिन्न प्रकार की माँगो से निपटने की शक्ति भी प्रदान करता है क्योंकि राजनीतिक व्यवस्था का अस्तित्व इस बात पर निर्भर करता है कि उसे जनता का कितना समर्थन प्राप्त है। यह समर्थन उसकी माँगो की पूर्ति की क्षमता पर निर्भर करता है। माँगे हमें यह समझने में सहायता करती हैं कि किस तरह पर्यावरण सम्पूर्ण राजनीतिक व्यवस्था पर अपना प्रभाव डालता है क्योंकि माँगो का जन्म सामाजिक पर्यावरण में होता है। माँगो की वैधता व्यवस्था की क्षमता तथा स्थायित्व को समझने में समर्थन सहायता करती है।

माँगे (Demands) —

माँग (Demands) मन की अभिव्यक्ति है। जिसके द्वारा किसी वस्तु विशेष के प्राधिकारिक आबंटन (Allocations) के लिए उन लोगों से जो कि इसको करने के लिए उत्तरदायी हैं, कहा जाता है कि ऐसा होना चाहिए या नही होना चाहिए। माँगे कई प्रकार की हो सकती हैं — संकीर्ण, विशिष्ट तथा सामान्य। उनको व्यक्त करने वाले लोगों तथा उनके उद्देश्यों पर यह निर्भर रहता है।

माँगो की अपनी एक निर्दिष्ट दिशा होती है। उनका बहाव सदैव सत्ता की ओर होता है। माँगो के दो रूप होते हैं — सुझाव तथा निर्देश। माँग दो प्रकार की होती हैं — स्पष्ट तथा अस्पष्ट। माँगे वैयक्तिक स्वार्थ तथा जनहित दोनों से सम्बन्धित हो सकती हैं।

समर्थन (Support) —

राजनीतिक व्यवस्था कुछ कार्य करती है। कार्य करने के लिए समर्थन का होना बहुत ही आवश्यक है। समर्थन एक महत्वपूर्ण निवेश है जिसके होने या न होने से महत्वपूर्ण परिणाम निकलते हैं। बिना समर्थन के माँगो का कोई औचित्य ही नही रह जाता। यह एक ऐसा बल है जो अधिकारियों का ध्यान माँगो की ओर आकर्षित करता है। समर्थन एक ऐसी कड़ी है जो राजनीतिक व्यवस्था को पर्यावरण से जोड़ती है। यदि अधिकारियों को व्यवस्था में समर्थन प्राप्त नही है तो माँगो का निवेश के रूप में विधायन करना सम्भव नही हो पायेगा। बिना समर्थन के शासन में स्थिरता नही आ पाती। सामाजिक एकता बनाये रखने के लिए समर्थन आवश्यक है।

By - DR. A. K. Yadav (Asstt. prof. G.P.T.T.)

Continue →

DEPARTMENT OF POLITICAL SCIENCE
D.B. COLLEGE, JAYNAGAR, BIHAR.

Lecture-No-22 Date-24-07-20

निर्गत प्रवाह (outputs)—

निर्गत वे उत्पादित वस्तुएँ हैं जो निवेश के रूपान्तरण के बाद प्राप्त होती हैं। निवेश को समर्थन द्वारा सूत्रबद्ध करके व्यवस्था के सामने निर्णय लेने के लिए रखा जाता है। राजनीतिक व्यवस्था विभिन्न प्रकार के निवेशों पर निर्णय लेती है। निर्गत व्यक्तियों द्वारा रखी गई मांगों पर राजनीतिक व्यवस्था का निर्णय है।

पुनर्निवेशन (Feedback)—

निर्गत का उद्देश्य सदस्यों की आवश्यकताओं को पूरा करना होता है। व्यवस्था के निर्गत से सदस्यों की आवश्यकताएँ पूरी हुई या नहीं, जनता की इस सम्बन्ध क्या प्रतिक्रिया है, इस सम्बन्ध में जो सूचनाएँ अधिकारीगणों के पास आती हैं उसे 'पुनर्निवेशन' कहते हैं। राजनीतिक व्यवस्था के अन्तर्गत सम्पादित होने वाली सभी क्रियाओं में सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य पुनर्निवेशन चक्र (Feedback loop) का है, क्योंकि इसके द्वारा सम्पादित कार्य की प्रक्रिया से राजनीतिक कार्यों का चक्र संचालित होता है।

पर्यावरण (Environment)—

राजनीतिक व्यवस्था सम्पूर्ण सामाजिक व्यवस्था में अन्य उप-व्यवस्थाओं (आर्थिक, धार्मिक) की तरह एक उपव्यवस्था की भूमिका अदा करती है। उसके पर्यावरण से आंशिक रूप से उसकी सहयोगिनी उपव्यवस्थाओं की बोध होता है जिन्हें आंतरिक सामाजिक पर्यावरण (Inter societal environments) की संज्ञा दी गयी है। आन्तरिक सामाजिक पर्यावरण को देखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि राजनीतिक व्यवस्था वातावरण (Ecology), जैविक तत्व तथा समाज की पद्धतियों द्वारा प्रभावित होती है।

समीक्षा—

डेविड ईस्टन का सामान्य व्यवस्था सिद्धान्त यो निवेश निर्गत विश्लेषण (Input-output Analysis) में संरचनात्मक कार्यात्मक विश्लेषण की भाँति व्यापकता होने के बावजूद

P.T.O

By- Dr. A.K. Yadav
(Asstt Prof G.P.T.T) Pol. Sc.

Scanned with CamScanner

B.A - Part - II (H) Paper - IV

इस पर [redacted] अगतिशीलता का आरोप नहीं लगाया जा सकता। इस सिद्धांत ने पुनर्निवेशन (Feedback) जैसी धारणाओं को शामिल करके अपने आपको गतिशील सिद्धांत के रूप में पेश किया है उससे किसी खास राजनीतिक व्यवस्था के साथ अपने को आबद्ध करने से बचाकर तुलनात्मक विश्लेषण को नई अन्तर्दृष्टि प्रदान की है

Date - 24.07.20

BY - DR. A.K. Yadav
(Asstt Prof G.P.T.T)
Pol. Sc

Scanned with CamScanner